



शब्दाचार्य दर्पण



राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय

कृषि विज्ञान केन्द्र, राजगढ़

डाक बंगला रोड, राजगढ़ (म.प्र.) 465661

वर्ष - 18

त्रैमासिक पत्रिका (अक्टूबर से दिसम्बर 2025)

अंक - 1

❖ संरक्षक ❖

प्रो. (डॉ.) अरविन्द कुमार शुक्ला

मा. कुलपति जी
राजमाता विजयाराजे सिंधिया
कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर

डॉ. व्ही. पी. सिंह

संचालक विस्तार सेवाएं
राजमाता विजयाराजे सिंधिया
कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर

डॉ. एस. आर. के. सिंह

संचालक
भा. कृ. अनु. परि. कृषि तकनीकी
अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान जोन-9
जबलपुर

डॉ. मोहम्मद यासीन

अधिष्ठाता
आर. ए. के. कृषि महाविद्यालय, सीहोर

❖ प्रधान संपादक ❖

डॉ. सुरेन्द्र कुमार कौशिक

वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख

❖ संपादक मण्डल ❖

श्रीमती गजाला खान

वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी

डॉ. रूपेन्द्र खाण्डवे

प्रधान वैज्ञानिक

डॉ. लाल सिंह

वैज्ञानिक

डॉ. अनिल कु. मिश्रा

वैज्ञानिक

संपादकीय....

रसायनिक उर्वरकों के अन्धाधुंध/बेतहाशा उपयोग करने से खेत की मिट्टी की गुणवत्ता एवं कार्बनिक अंश कम हो गए हैं। ये रसायनिक उर्वरक भूजल और सतही जल को भी प्रदूषित करते हैं। इससे खेती में फसल की उत्पादन लागत भी काफी बढ़ जाती हैं। अतः प्राकृतिक खेती, रसायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों/फफूंदनाशकों के स्थान पर स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों (जैसे गोबर, गौ-मूत्र) का उपयोग करके मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने, कृषि लागत को न्यूनतम करके और कृषि उत्पादों को गुणवत्तायुक्त और स्वास्थ्यवर्धक बनाने के लिये अत्यन्त आवश्यक है। इसके साथ ही यह खेती पर्यावरण को भी संतुलित और संरक्षित करती है। इस तारतम्य में भारत सरकार के कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय से प्राप्त निर्देशानुसार प्राकृतिक खेती में महिला कृषकों की भागीदारी बढ़ाने हेतु समस्त कृषि विज्ञान केन्द्रों को 40 कृषि सखियों को खरीफ एवं 40 कृषि सखियों को रबी में प्रशिक्षण देने का लक्ष्य दिया गया है। इसी क्रम में कृषि सखियों हेतु कृषि विज्ञान केन्द्र एवं किसान कल्याण तथा कृषि विकास विभाग राजगढ़ के संयुक्त तत्वाधान में पांच दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन दिनांक 22.08.2025 से 26.08.2025 तक किया गया। इस कार्यक्रम में जिला कलेक्टर महोदय डॉ. गिरिश कुमार मिश्रा द्वारा कृषि सखियों को प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने हेतु संबोधित किया। महोदय द्वारा कृषि सखियों एवं विभाग के अधिकारियों से आह्वान किया कि खेती में कम से कम कर्षण-क्रियाएँ करके अच्छा एवं गुणवत्ता युक्त उत्पादन लिया जाने का प्रयास करें। तकनीकी सत्र में कार्बनिक पदार्थों का महत्व एवं मृदा स्वास्थ्य बढ़ाने की तकनीकी जानकारी दी गई। मृदा में कार्बनिक पदार्थ बढ़ाने हेतु अच्छादन एवं फसल चक्र अपनाने की सलाह दी एवं बीजामृत बनाने की विधि व्यवहारिक रूप से बताई गई। जीवामृत बनाने की विधि प्रायोगिक रूप से कृषि सखियों को सिखाई गई। जीवामृत को दलहनी फसलों और सब्जियों में विशेषकर उपयोग करने पर प्रकाश डाला। कृषि सखियों को व्हाट्सएप ग्रुप द्वारा सूचना एवं संचार तकनीकी का उपयोग कर दूसरे किसान भाईयों एवं बहनों को प्राकृतिक खेती की जानकारी साझा करने पर जोर दिया।



अधिक जानकारी के लिये सम्पर्क। मोबा: 7000108925

सोशल मिडिया

kvk.rajgarh@rvskvv.net



@KVKRajgarh



kvk.rajgarh



@kvkrajgarh

• कृषि संबंधी जानकारी हेतु निःशुल्क नं. 1551 एवं 14426 पर सम्पर्क करें। • त्रैमासिक पत्रिका (अक्टूबर से दिसम्बर 2025)

पिछले तीन माह (जुलाई से सितम्बर 2025) में सम्पादित कार्यक्रम

● पक्षेत्र परीक्षण

समस्या : सोयाबीन में पीला मोजेक विषाणु रोग प्रतिरोधी एवं मध्यम अवधि में पकने वाली किस्म की अनुपलब्धता से पैदावार में कमी

1. सोयाबीन की उन्नत किस्म RVSM 2011-35 का मूल्यांकन

टी-1 : कृषक विधि JS-9560

टी-2 : RVS-24

टी-3 : RVSM 2011-35

समस्या : पुरानी एवं कम उपज क्षमता वाली किस्मों के प्रयोग से मक्का में कम उत्पादकता

2. मक्का का उन्नत संकर HQPM-6 का मूल्यांकन

टी-1 : कृषक विधि JM-12

टी-2 : JM-218

टी-3 : HQPM-6



समस्या : टमाटर में सफेद मक्खी के प्रकोप के कारण पैदावार में कमी

3. टमाटर में सफेद मक्खी कीट प्रकोप का एकीकृत कीट प्रबंधन द्वारा आंकलन

टी-1 : कृषक विधि - केवल कीटनाशकों का उपयोग

टी-2 : नीम एक्स्ट्रेट 1500 ppm के दो छिड़काव +5 फेरामोन ट्रेप प्रति हे. +पीले रंग के चिपचिपे बोर्ड @ 20 प्रति हे.

टी-3: 18.5 EC पथायोमिथाक्जाम का छिड़काव+ फफूंदनाशी क्लोरोथैलोनिल @2 ग्राम/ली.+गंधक 2 ग्राम/ली. का उपयोग।



समस्या : खुली सिंचाई के कारण पानी की अधिक मांग एवं खरपतवारों का प्रकोप से मिर्च की उपज में कमी और लागत में बढ़ोतरी

4. मिर्च में प्लास्टिक मल्टिप्लिंग का आंकलन

टी-1 : कृषक विधि- उठी चौड़ी क्यारी पर मिर्च की पौध रोपाई और खुली सिंचाई देना

टी-2 : उठी चौड़ी क्यारी पर मिर्च की पौध रोपाई एवं ड्रिप विधि से सिंचाई देना।

टी-3 : उठी चौड़ी क्यारी पर मिर्च की पौध रोपाई एवं खुली सिंचाई देना।



समस्या : जलवायु परिवर्तन और कीट प्रकोप के कारण सोयाबीन फसल खेती की अनुपयुक्तता

5. फसल विविधीकरण के अंतर्गत सोयाबीन के स्थान पर अश्वगंधा की उन्नत किस्म समपुष्टि का मूल्यांकन

टी-1 : कृषक विधि- सोयाबीन

टी-2 : अश्वगंधा (समपुष्टि)



समस्या : खेत में खाली मेड़ों से शून्य अतिरिक्त आय सृजन के लिये कृषि वानिकी घटकों का अभाव

6. खेती की फसलो के साथ मेड़ों पर सहजन Moringa Olifera की खेती

टी-1 : कृषक विधि-फसल के साथ खेत की मेड़ों पर पेड़ों का न होना।

टी-2 : फसल के साथ खेत की मेड़ों पर अतिरिक्त आय हेतु सहजन के पेड़ों को लगाना।

● अग्रिम पवित्र प्रदर्शन (एफ.एल.डी.)

1 क्लस्टर प्रदर्शन के अन्तर्गत सोयाबीन पर 20 हे.में 50 कृषकों के खेत पर प्रदर्शन लगाए गए। जिसमें किसानों को सम्पूर्ण उत्पादन तकनीक में केन्द्र से RVSM 2011-35 का बीज प्रदाय किया गया एवं उन्हें तकनीक की जानकारी दी गई।



2 सोयाबीन पर 4.0 हे. में 10 कृषकों के खेत पर नैनो डीएपी का प्रदर्शन लगाया गया जिसमें केन्द्र द्वारा नैनो डी.ए.पी. उपलब्ध करवाते हुए बीज उपचार एवं पर्णोप छिड़काव की जानकारी प्रदाय की गई।



3 कृषि बागवानी प्रणाली के अन्तर्गत 10 किसानों को अमरूद की L-49 प्रजाति के 10 पौधे प्रति किसान दिये गए। साथ ही उन्हें तकनीकी जानकारी प्रदाय की गई जिसमें उन्हें बताया गया कि पौधे लगाने में गड्डे का साइज 75X75X75 cm रखना है एवं उसमें 30 % वर्मीकम्पोस्ट और एफ.वाय.एम +10 % रेत 1 कि.ग्रा. नीम की खली का उपयोग करना है।



4 सोयाबीन की उन्नत किस्म जे.एस. 20-116 का 4.0 हे में 10 किसानों के खेत में प्रदर्शन लगाए गये। केन्द्र द्वारा बीज प्रदाय किया गया एवं संस्तुत उर्वरक उपयोग की जानकारी दी गई।

5 सोयाबीन की उन्नत किस्म आर.वी.एस.-24 का 4.0 हे में 10 किसानों के खेत में प्रदर्शन लगाए गये। केन्द्र द्वारा बीज प्रदाय किया गया एवं संस्तुत उर्वरक उपयोग की जानकारी दी गई।

6 किसानों के खेत में हल्दी की उन्नत किस्म ROMA का 4.0 हे में 10 किसानों के खेत में प्रदर्शन किया गया जिसमें उन्हें प्रकंद को ट्राईकोर्मा से उपचार करने के उपरान्त बुवाई की विधि बताई गई।

7 संतरा में फल-फूल झड़ने की समस्या के समाधान हेतु 4.0 हे. में 10 किसानों के खेत पर प्रदर्शन डाले गए जिसमें निम्नानुसार तकनीक उपयोग करना है- GA3 10 PPM+ यूरिया 1% का प्रथम छिड़काव फूल आने की अवस्था में, तत्पश्चात् 2,4-D 15PPM + कार्बेन्डाजिम 1000 PPM+ यूरिया 1% का दूसरा छिड़काव जब फल का साइज 8-10 mm का हो जाए एवं तिसरा छिड़काव GA3 10 PPM+KNO₃ 1% दो महीने बाद फल का साइज 18-20 mm हो जाए।



● कृषि संबंधी जानकारी हेतु निःशुल्क नं. 1551 एवं 14426 पर सम्पर्क करें। ● त्रैमासिक पत्रिका (अक्टूबर से दिसम्बर 2025)

संपादित प्रशिक्षण विवरण -

क्र.	विषय	प्रशिक्षण संख्या			लाभार्थी संख्या
		संस्थागत	असंस्थागत	कुल	
1	कृषि वानिकी	1	2	03	76
2	प्राकृतिक खेती	1	0	01	40
3	उद्यानिकी	4	7	11	309
4	फसल उत्पादन तकनीक	0	6	06	215
	कुल	6	15	21	640



संपादित विस्तार गतिविधियां

क्र.	विवरण	संपादित	लाभार्थी
1	प्रक्षेत्र दिवस	02	94
2	कृषक संगोष्ठी	01	63
3	गाजरघास उन्मूलन सप्ताह 16-22 अगस्त 2025	01	77
4	चलचित्र प्रदर्शन	15	434
5	स्वच्छता ही सेवा अभियान (स्वच्छता पखावाड़ा)	01	226
6	वैज्ञानिकों द्वारा किसान खेत का दौरा	35	426
7	किसानों द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र पर भ्रमण	60	192
8	विद्यालयीन छात्रों द्वारा के.वी.के. का शिक्षण भ्रमण	10	410
9	हिन्दी शपथ/पखावाड़ा	01	26
10	18 वॉ स्थापना दिवस	01	24
11	रेडियो वार्ता	02	Mass
12	किसान मोबाईल संदेश	13	80479
13	कृषि चौपाल	01	27
14	पी.एम.कार्यक्रम	01	89

विशेष कार्यक्रम

गाजरघास उन्मूलन सप्ताह -कृ.वि.के., राजगढ़ द्वारा 16 अगस्त से 22 अगस्त को गाजरघास जागरूकता सप्ताह मनाया गया। इस जागरूकता अभियान में पोस्टर, रेली, गाजरघास से कम्पोस्ट बनाने की विधि प्रदर्शन बचाव के रसायनिक एवं जैविक विधियों पर जागरूकता कार्यक्रम किये जाते हैं। वर्तमान समय में गाजरघास भारत में लगभग 35 मिलियन हेक्टेयर भूमि में फैल चुका है। यह एक वर्षीय शाकीय पौधा है जो 3-4 माह में अपना जीवन चक्र पूरा कर लेता है। गाजरघास मनुष्य एवं पशुओं के लिये हानिकारक है। इसके दुष्प्रभाव एवं बचाव हेतु केन्द्र द्वारा निरन्तर प्रयास जारी है।



प्रदर्शनी

मुख्यमंत्री कार्यक्रम दिनांक 7 अगस्त 2025 को मण्डि प्रांगण नरसिंहगढ़ में माननीय मुख्यमंत्री म.प्र. शासन डॉ. मोहन यादव जी द्वारा लाडली बहना योजनांतर्गत कार्यक्रम में केन्द्र की तकनीकी/उत्पाद प्रदर्शनी लगायी गयी।

दिनांक 29 अक्टूबर 2025 को आर.ए.के. कृषि महाविद्यालय सीहोर में महामहिम राजपाल म.प्र. शासन श्री मंगूभाई पटेल एवं माननीय कुलपति रा.वि. सि.कृ.वि.वि. ग्वालियर प्रो.(डॉ.) अरविन्द कुमार शुक्ला द्वारा कन्या छात्रावास तथा ऐरापोनिक्स इकाई के उद्घाटन अवसर पर केन्द्र द्वारा कृषि तकनीकी एवं उत्पाद प्रदर्शनी आयोजित की गई।



अन्य गतिविधियां

READY योजना-

कृषि विज्ञान केन्द्र, राजगढ़ में अधिष्ठाता आर.ए.के. कृषि महाविद्यालय सीहोर से बी. एस.सी. अंतिम वर्ष के छात्रों को ग्रामीण उद्यमिता जागरूकता एवं विकास योजना (READY) अंतर्गत आगामी तीन माह हेतु भेजा गया है।

इनको केन्द्र द्वारा अंगीकृत ग्रामों में टीम गठित कर जिले के ग्रामीण किसानों के साथ अनुभव साझा कर कृषि की वर्तमान स्थिति के माध्यम से जानकारी प्राप्त की गई।

इसके साथ ही कृषि औद्योगिकी अनुलंगक (AIA) द्वारा औद्योगिकी प्रसार गतिविधियों का अनुभव भी छात्रों को प्राप्त हुआ है।

कृषि विज्ञान केन्द्र प्रक्षेत्र -

वर्तमान में प्रक्षेत्र पर बीजोत्पादन कार्यक्रम के अन्तर्गत कुल 5.0 हेक्टेयर क्षेत्र पर गेहूँ किस्म-TRVW-155 (DBW187, HI1650) एवं सरसों किस्म (गिरिराज, पी.एम 32) 1.00 हेक्टेयर में लगाई गई है।

प्राकृतिक खेती प्रदर्शन इकाई -

केन्द्र के प्रक्षेत्र एवं कार्यालय परिसर में प्रदर्शन हेतु हल्दी की किस्म रोमा लगाई गई है। इसके अलावा प्रक्षेत्र पर बगीचे में फलदार वृक्षों के बीच स्थान पर भी हल्दी लगाई गई है। इस प्रदर्शन के माध्यम से किसान भाई बगीचों में खाली एवं छायादार स्थान का उपयोग कर उद्यानिकी फसले अपनाकर अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं।



• कृषि संबंधी जानकारी हेतु नि:शुल्क नं. 1551 एवं 14426 पर सम्पर्क करें। • त्रैमासिक पत्रिका (अक्टूबर से दिसम्बर 2025)

आगामी तीन माह (अक्टूबर से दिसम्बर 2025) में सम्पादित होने वाले कार्यक्रम

1. प्रक्षेत्र परीक्षण :

1. फसल विविधीकरण में अधिक आय उपार्जन हेतु स्ट्रबेरी (Sweet Charli) फसल का आंकलन
2. लहसुन में बैंगनी धब्बा रोग नियंत्रण के लिए प्राकृतिक खेती का आंकलन
3. फसल विविधीकरण के अंतर्गत गेहूँ के स्थान पर कलौंजी की उन्नत किस्म NS-44 का आंकलन
4. वृक्ष फसल परस्पर क्रिया का आंकलन
5. सरसो की उन्नत प्रजाति PM-32 का आंकलन
6. गेहूँ की उन्नत प्रजाति का आंकलन

2. अमीम पवित्र प्रदर्शन

1. गेहूँ की उत्पादन वृद्धि में नैनो यूरिया और झिएपी का प्रदर्शन
2. धानियों की उन्नत किस्म अजमेर धनिया-2 का प्रदर्शन
3. अमरूद में छल खाने वाली इल्ली का समन्वित कीट प्रबंधन का प्रदर्शन
4. गेहूँ की उन्नत किस्म HI 1544 का प्रदर्शन
5. मसूर की उन्नत किस्म कोटा, मसूर-4 का प्रदर्शन
6. चंद्रसूर की उन्नत किस्म HLS-4 का प्रदर्शन
7. किसान सारथी ऐप के माध्यम से कृषि संदेश की सार्थकता पर प्रदर्शन

3. प्रशिक्षण कार्यक्रम -

(क) कृषक एवं महिला प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1	फसल उत्पादन	3	3	75
2	पौध संरक्षण	2	2	50
3	उद्यान विज्ञान	3	3	75
4	पौध प्रजनन	3	3	75
5	औषधीय फसल उत्पादन	2	2	50
6	बायोटेक किसान हब	4	4	300
	योग	17	17	625

(ख) ग्रामीण युवा एवं व्यवसायिक प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि	प्रशिक्षणार्थी
1	फसल उत्पादन	1	1	25
2	उद्यानिकी	1	1	25
3	पौध प्रजनन	1	1	25
4	औषधीय फसल उत्पादन	1	1	25
	योग	4	4	100

(ग) अन्तः सेवाकालीन प्रशिक्षण

क्र.	विषय	संख्या	अवधि दिन	प्रशिक्षणार्थी
1	फसल उत्पादन	1	1	25
2	पादप प्रजनन	1	1	25
3	औषधीय फसल	1	1	25
4	उद्यान विज्ञान	1	1	25
5	सूचना एवं संचार तकनीकी	1	1	25
	योग	5	5	125

4. विस्तार गतिविधियां

क्र.	विषय	संख्या	लाभार्थी
1	प्रक्षेत्र दिवस	03	75
2	कृषक संगोष्ठी	02	75
3	टी.वी. कार्यक्रम	02	Mass
4	रेडियो वार्ता	03	Mass
5	केन्द्र पर कृषकों का भ्रमण	20	750
6	वैज्ञानिकों का खेतों पर भ्रमण	14	Mass
7	अन्य दिवस	05	120
8	समाचार पत्रों में खबरें	30	Mass
9	लोकप्रिय लेख	04	Mass
10	समूह चर्चा	08	50
11	44-फिल्म प्रदर्शन	20	Mass
12	पी.एम.किसान	01	80

आगामी तीन माह में किये जाने वाले कार्य -

- फूलगोभी, टमाटर, बैंगन आदि सब्जी वाली फसलों की रोपाई करें।
- फल वाली फसलों में तना सड़न की रोकथाम हेतु बोर्डे मिश्रण या ताम्र फफूंद नाशक का छिड़काव 10 दिन के अंतराल पर करें।
- फल वाली फसलों में तना छेदक व फल सड़न की रोकथाम करें।
- अगेती मटर एवं आलू की बुवाई सितम्बर से शुरू करें।
- खरीफ फसलों की कटाई के बाद परीक्षण के लिये मृदा नमूना एकत्र करके उसका परीक्षण करायें तथा अनुशंसित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करें।
- चने की उन्नत उकटा निरोधक किस्मों आर.व्ही.जी.-205, आर.व्ही.जी.-210, आर.व्ही.जी.-204, जे.जी.-218, जे.जी.11, जे.जी.-6, जे.जी.-16 इत्यादि बीज का चयन करें।
- चने के बीज को ट्राइकोडर्मा 5 ग्राम या कार्बेन्डजिम 3 ग्राम प्रति किलो बीज तथा 5-10 ग्राम राइजोबियम एवं 5-10 ग्राम पी.एस.बी. प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके सीड कम फर्टीलिज से बुवाई करें।
- सरसों की रोग निरोधक किस्मों जैसे आर.वी.एम.-1, आर.वी.एम.-2, डी.आर.एम.आर.-आई.जे.31 (गिरि राज), आर.एच.749 आदि के प्रमाणित बीज की बुवाई करें तथा अंकुरण के 7-10 दिनों के पश्चात् आरामकखी, पेंटेड बग आदि के नियंत्रण के उपाय अपनायें आलू के कंदों को बुवाई पूर्व डायथेन एम-45 फफूंदनाशक 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर उपचारित करें।
- हरे चारे हेतु बरसीम (जे. बी. 1, जे. बी. 5, बुन्देल बरसीम 3, वरदान), जई (जवाहर जई-1, जे.एच.ओ.-822, बुन्देल जई-851, यू.पी.ओ. 212), रिजका (आनन्द 2, टी 9) की बुवाई करें।
- गेहूँ में पहली सिंचाई शीर्ष जड़ निकलने के समय करें तथा इसके 10-12 दिन के बाद कम से कम एक बार निराई गुड़ाई कर खरपतवार अवश्य निकालें।
- गेहूँ में चौड़ी व सकरी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण हेतु सल्फोसल्फयुरॉन 75 प्रतिशत डब्लू.डी.जी., 25 ग्राम सक्रिय तत्व/हे की दर से अथवा चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों की अधिकता होने पर मेत्सल्फयुरॉन मिथाईल 20 प्रतिशत डब्लू.पी. 4-6 सक्रिय तत्व/हे की दर से 30-35 दिन की अवस्था पर छिड़काव करें।
- टमाटर, लहसुन एवं गोभी की फसल में निराई-गुड़ाई कर खरपतवार निकालें एवं सिंचाई करें।
- पोषक बगीचे हेतु क्यारियां बनाये एवं मेथी, पालक, मूली, गाजर, धनियां लगाये।
- बरसीम फसल की सिंचाई 15-20 दिन के अन्तराल पर करते रहें। लूसर्न की बिजाई माह के मध्य तक पूरी कर लें।

बुक पोस्ट

प्रेषक :

वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख

कृषि विज्ञान केन्द्र, राजगढ़ (ब्यावरा)म.प्र. 465661

प्रति,